موضوع الخطبة :أهمية الصلاة

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن تيمى (@Ghiras_4T)

षीर्शक:

नमाज़ का महत्व

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई

बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा)अपनाओ और उसका भय सवेद अपने हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि नमाज़ तुम्हारा एक स्वोंत्त अ़मल है,शरीअ़त(इस्लाम धर्म)में उसके महत्व के दस स्वरूप हैं:

1.प्रथम:नमाज़ ही वह प्रार्थना है जिसे अल्लाह ने शहादतैन

لا إله إلا الله محمد رسول الله

के पश्चात सर्वप्रथम फर्ज़ किया,इसी प्रकार वह इस्लाम का द्वितीय स्तंभ है,अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा ने बयान किया:मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:"इस्लाम दो चीजों पर आधारित है:इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं और यह कि ह़ज़रत मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ पढ़ना,ज़कात देना,ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े(उपवास)रखना"।[1]

2.नमाज़ की अहमियत का एक प्रमाण यह भी है कि वह मदीना की ओर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के हिजरत करने से पूर्व मक्की जीवन के समय वर्ष 3 बेसते नबवी(आप के संदेशवाहक बनाए जाने के तीसरे वर्ष)इसरा व मेराज के अवसर पर आकाश पर फर्ज़ हुई,अत:अल्लाह तआ़ला ने सातवें आकाश पर पांचों समय की नमाज़ें किसी देवदूत के माध्यम के बिना अपने और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बीच बिना किसी स्त्रोत के संबोधन के माध्यम से फर्ज़ किया।

3.नमाज़ के महत्वपूर्ण होने का एक प्रमाण यह भी है कि इस्लाम धर्म में इसका एतना महत्ता है कि किसी अन्य प्रार्थण से इसकी तुलना नहीं की

---

[1] इसे बोखारी(8)और मुस्लिम(16)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।

जा सकती,अतःवह धर्म का एसा स्तंभ है जिस के बिना उसका भवन खड़ा नहीं हो सकता,मोआ़ज़ बिन जबल रज़ीअल्लाहु अंहु की वर्णित ह़दीस में आया है कि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह ने उनसे फरमायाःक्या में तुम्हें दीन का, मूल सिद्धांत, इसका स्तंभ और इसकी चोटी न बता दूं?मैं ने कहाःक्यों नहीं?अल्लाह के रसूल!(अवश्य बताएय)आप ने फरमायाःदीन का नींव इस्लाम है और इसका स्तंभ नमाज़ है और इसकी चोटी जेहाद है।[2]

4.नमाज़ का एक महत्व यह भी है कि वह बंदा और उसके रब के बीच कानाफूसी का स्त्रोत है,क्योंकि वह(एक साथ) हृदय ,जीभ और शरीर से अल्लाह का जिक करने पर आधारित होती है,जैसा कि अल्लाह तआ़ला की प्रशंसा करना और उससे दुआ़ रकना,कुरान का सस्वर पाठ करना,तस्बीह(سبحان الله),तह़मीद(الحمد لله)और तक्बीर(الله أكبر)कहना,शरीर के अंगों से खुशू खोजू(विनम्रता एवं दीनता) का प्रदर्शन करना,जैसे रुकू व सज्दा करना,विनर्मतापूर्वक क़्याम रकना,सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेठ परमेश्वर के समक्ष पलकें झुकाए रखना,नमाज़ में शरीर के अंगों की इतनी प्रार्थानाएं इकट्ठा हो जाती हैं जो अन्य किसी प्रार्थाना में नहीं होतीं।

5.नमाज़ के महत्व का एक प्रमाण यह भी है कि अनेक से ऐसे कार्य इसके अंदर पाए जाते हैं जो अन्य पूजाओं में नहीं पाई जाते,जिन में से कुछ कार्य ये हैं:

- इसके लिए पुकारना,जो कि अज़ान कहला ता है।
- इसके लिए पवित्रता प्राप्त करना अनिवार्य है।
- इसके लिए शांति एवं पतिष्ठा के साथ जाना।
- इसमें समस्त अंगों की ऐसी प्रार्थानाएं पाई जाती हैं जो अन्य प्रार्थानाओं में नहीं पाई जातीं।

[2] इसे तिरमिजी(2616)ने वर्णित किया है और कहाःयह ह़दीस ह़सन है।

6.नमाज़ के महत्वपूर्ण होने का एक प्रमाण यह भी है कि यात्रा व उपस्थिति,भय व डर,शांति व अमन,स्वास्थ्य व रोग हर अवस्था में इसका पढ़ना अनिवार्य ह,किंतु उस समय नहीं जब मनुष्य को ऐसा रोग हो जाए जिसके कारण बुद्धि व चेतना खतम हो जाए।

7.नमाज़ के महत्व का एक प्रमाण यह भी है कि पैगंबर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने मृत्यु वाले रोग में इसकी वसीयत(परामर्श)की,अतःउम्मे सल्मा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि जिस रोग में पैगंबर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का दहांत हुआ,उस समय आप फरमाया करते थेः"नमाज़ (की रक्षा करो)और(उन दासियों एवं दासों की)जो तुम्हारे हाथों की संपत्ति हैं"।आप ने यह शब्द बार बार फरमाए यहां तक कि आपकी पवित्र जबान रुक गई।[3] अर्थात जब तक जबान चलती रही आप इसकी वसीयत(परामर्श)करते थे।
8.नमाज़ की महत्ता का एक प्रमाण यह कि नमाज़ ही वह कार्य है जिस के प्रति क़्यामत के दिन बंदा से स्र्वप्रथम प्रश्न किया जाएगा,अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःक़्यामत के दिन स्र्वप्रथम बन्दा से जिस कार्य का हिसाब व किताब लिया जाएगा वह नमाज़ है,आपने फरमायाःअल्लाह तआ़ला देवदूतों से फरमाएगा जबकि वह अति जानने वाला हैः(मेरे बंदे की नमाज़ देखो!क्या उसने इसको पूरा किया है अथवा इसमें कोई कमी है?)।अतःयदि वह पूरी हुई तो पूरी की पूरी लिख दी जाएगी और यदि उसमें कोई कमी हुई तो फरमाएगा कि देखो!क्या मेरे बंदे के कुछ नवाफिल भी हैं?यदि नफिल हुए तो वह फरमाएगा मेरे बंदे के फर्जों को उसके नफलों से पूरा करदो।फिर इसी प्रकार से अन्य आ़माल लिए जाएंगे।[4]
9.नमाज़ के महत्वपूर्ण होने का एक प्रमाण यह भी है कि अंत काल में नमाज़ धर्म का वह अंतिम भाग होगा जो लोगों के अंदर से खत्म हो जाएगा,इसका प्रमाण आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस हैःएक एक करके इस्लाम के सारे बंधन टूट जाएंगे,जब भी एक बंधन टूटेगा तो

[3] इसे इब्ने माजा(1625),अह़मद(6/290)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने"अलइरवा"(7/238)में इसे वर्णित किया है।
[4] इसे अबूदाऊद(846)और अह़मद(2/425)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द अबूदाऊद के हैं,इसे अल्बानी रह़ीमहुल्लाहु ने अलमुस्नद के शोघ में सह़ी कहा है,इसी प्रकार अलमुस्नद के शोधकर्ताओं ने भी इस को सह़ी कहा है।

लोग उसके बाद वाले बंधन से जुड़ जाएंगे,र्स्वप्रथम टूटने वाला बंधन शासन एवं सब से अंत में टूटने वाला बंधन नमाज़ होगी।[5]

10.नमाज़ के महत्व का एक प्रमाण यह भी है कि वह इस्लाम एवं कुर्फ के बीच अंतर करने वाली है,अतःबरीदा बिन अलहृसीब रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं किःहमारे एवं काफिरों के बीच अंतर नमाज़ से है,जिस ने नमाज़ छोड़दी उसने कुर्फ किया।[6]

अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जो व्यक्ति हमारी जैसी नमाज़ पढ़े,और हमारे क़िब्ले की ओर मुख करे और हमारा ज़बीहा(हृलाल पशु)खाए तो वह मुसलमान है जिसे अल्लाह और उसके रसूल की रक्षा प्राप्त है,अतःतुम अल्लाह की रक्षे में ख्यानत न करो"।[7]

ए मुसलमानो!ये वे दस प्रमाण हैं जो नमाज़ के महत्वपूर्ण होने पर साक्ष्य हैं,अल्लाह तआला समास्त लोगों को अपने आदेश के अनुसार नमाज़ पढने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान करे।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको क़ुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको क़ुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

---

[5] इसे अहृमद(5/251)ने अबू ओमामा बाहिली रजीअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है,अलमुस्नद के शोधकर्ताओं का कहना हैःइसकी सनद जय्यिद है,आपका कथन हैः(र्स्वप्रथम बंधन शासन होगी)का अर्थ यह है किःर्स्वप्रथम इस्लाम का जो बंधन टूटेगा वह यह कि शासन एवं शासकों में बिगाड़ आजाएगी।में(लेखक)कहता हूं किःयह बिगाड़ हमारे युग में बिल्कुल स्पष्ट है,अतःइस्लामी देशों में शासन की प्रणाली प्रचलित है वह(मनुष्य)के स्वयं निर्मित नियम हैं,الا ما شاء اللہहम अल्लाह से ही इसकी शिकायत करते हैं।

[6] इसे तिरमिज़ी(2621),निसाई(462),इब्ने माजा(1079),इब्ने हि़ब्बान(1454)और अहृमद(5/346)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने इब्ने शैबा कि किताब"इलईमान"(46)पर अपनी समीक्षा में लिखा है किःइसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर है।

[7] इसे बोखारी(391)ने वर्णित किया है।

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده .

प्रशंसाओं के पश्चात!

आप जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि नमाज़ बंदा और उसके रब के बीच कानाफूसी का एक माध्यम है,क्योंकि वह दुआ एवं अल्लाह की प्रशांसा,कुरान का सस्वर पाठ,तस्बीह(سبحان الله)व तह़मीद(الحمد لله)एवं तक्बीर(الله أكبر),शरीर के अंगों के खोशू व खोजू(विनम्रता एवं दीनता) से सम्मिलित है,जैसे रुकू व सज्दा करना,विनर्मता पूर्वक क़्याम करना,स्वोंत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के समक्ष पलकें झुकाए रखना।शैख अ़ब्दुर्रह़मान बिन सादी रह़ीमहुल्लाहु अल्लाह के इस कथनः

﴿إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ولذكر الله أكبر﴾

की व्याख्या में लिखते हैंःतथा नमाज़ के अंदर इससे भी बड़ा उद्देश्य रखा है,वह यह कि नमाज़ एक साथ हृदय जोभ एवं शरीर हर एक के साथ अल्लाह का जिक करने पर आधारित है,अल्लाह तआ़ाला ने बंदों को अपनी पूजा के लिए पैदा किया और सबसे श्रेष्ठतर प्रार्थना जिसे बंदा करता है वह नमाज़ है,इसके अंदर शरीर के समस्त अंग की एतनी प्रार्थनाएं इकट्ठा होती हैं कि अन्य किसी प्रार्थना में इकट्ठा नहीं होती,इसी लिए अल्लाह ने फरमायाः ﴿ولذكر الله أكبر﴾

अर्थातःऔर अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान है।

आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा कर–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ाला तथा उसके फरिशते दरूद भेजत हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपनी उम्मत को शुक्रवार के दिन अपने ऊपर अधिक से अधिक दरूद भेजने पर उकसाते हुए फरमायाः"तुम्हारे अच्छे दिनों में से शुक्रवार का दिन भी एक बेहतर दिन है,इस लिए उस दिन मेरे ऊपर अधिक से अधिक दरूद भेजो,क्योंकि तुम्हारा दरूद व सलाम मेरे ऊपर प्रस्तुत किया जाता है"।ए अल्लाह तू अपने बंदे एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर रह़मत भेज,उनके उत्तराधिकरियों,अनुयायियों और क़यामत तक निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा,हे अल्लाह तू हमें अपने देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सूधार दे,उन्हें हिदायत का निर्देशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह!जो हमारे प्रति,इस्लाम एवं मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखे तू उसे स्वयं ही में व्यस्त करदे,और उसके फरेब व चाल को उसके लिए वबाले जान बना दे।

हे अल्लाह!मुद्रास्फीति,महामारी,ब्याज,बलात्कार,भूकंप एवं आजमाइशों को हमसे दूर करदे और आंतरिक एवं बाह्य उत्पीड़नों की बुराइयों को हमारे ऊपर से उठाले,विशेष कर हमारे देश से और सामान्य रूप से समस्त मुसलमानों के देशों से,ह दोनों संसार के पालन्हार!हे अल्लाह हमसे महामारी एवं संकट को दूर फरमा,निसंदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह!तू समस्त मुसलमानों के शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने और अपने धर्म की उत्थान की तौफीक़ प्रदान कर और उन्हें उनके प्रजा के लिए दया का कारण बना।

ए हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भलाई प्रदान फरमा,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय का,भलाई का और परिजनों के साथ सुन्दर व्यवहार का आदेश देता है और असभ्यता एवं अशिष्टता के कार्या,अशिष्ट गतिविधियों एवं अन्याय से रोकता है।वह स्वयं तुम्हें परामर्श कर रहा है कि तुम परामर्श प्राप्त करो,इस लिए तुम अल्लाह तआ़ला का जिक करो वह तुम्हारा जिर्क करेगा,उसकी नेमतो(आशीर्वादों)पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें अधिक

नमतें(आशीर्वाद)प्रदान करेगा,अल्लाह का जिर्क बहुत बड़ी चीच है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।

लेखकः

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

२२ सफर १४४२ हिजरी

जूबैल–सऊदी अ़रब

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com